NS – 080

III Semester B.Sc. Examination, November/December 2016
(Fresh) (C.B.C.S.) (2016 – 17 & Onwards)
HINDI – Language – III
Natak, Sahityakaro-ka-Parichai, Sankshepan

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्यांश में लिखिए : **(10x1=10)**

1) शोभा की पुत्री का नाम क्या है ?

2) संगीत का रियाज़ कौन करती थी ?

BMSCW

3) "बिना दीवारों के घर" नाटक के नाटककार कौन हैं ?

4) अजित कहाँ काम करता था ?

5) जीजी का असली नाम क्या है ?

6) शोभा के घर काम करने के लिए बंसीलाल को कौन भेजता है ?

7) मीना को चौरंगी तक किसने छोड़ा ?

8) छुट्टियों में शोभा कहाँ जाना चाहती थी ?

9) सेठ संपतलाल कौन-सा कारोबार कर रहे थे ?

10) शोभा किस कॉलेज में प्रिन्सीपल थी ?

II. किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **(2x7=14)**

1) "अपनी चीज़ें संभालकर रखा करें। यह शिक्षा तो तुमको देनी चाहिए उसे कम-से-कम"।

2) "अरे साब ! दस रूपए के लिए बेइमानी, करके कौन अपना लोक-परलोक बिगाड़े"।

3) विदेशों में इतनी औरतें काम करती हैं, वहाँ क्या सब मारे-मारे ही फिरते हैं ?

P.T.O.

III. "बिना दीवारों के घर" नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

"यह शायद बनानेवाले और बननेवाले का संघर्ष है ? जो दो पीढ़ियों के बीच हो सकता है और एक ही पीढ़ी के दो व्यक्तियों के बीच भी" – 'बिना दीवारों के घर' नाटक के आधार इस कथन का विवेचन कीजिए।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (2×5=10)

1) जीजी

2) मीना

3) जयंत।

BMSCW

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए : (1×10=10)

1) विष्णु प्रभाकर ।

2) भीष्म साहनी ।

VI. उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए : 10

मेरी समझ में केवल मनोरंजन काव्य का साद्य नहीं है। कविता पढ़ते समय मनोरंजन अवश्य होता है, पर उसके उपरांत कुछ और भी होता है। मनोरंजन करना, मन को बहलाना कविता का प्रधान गुण है। जिससे वह मनुष्य के चित को अपना प्रभाव जमाने के लिए वश में किये रहती है उसे इधर-उधर जाने नहीं देति। मन को अपने बस में किए रहती है। यही कारण है कि नीति और धर्म संबंधी उपदेश चित्त पर वैसा असर नहीं करते, जैसे कि काव्य साहित्य की कोई और विधा से निकली हुई शिक्षा असर करती है। कविता अपनी मनोरंजन – शक्ति के द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त उचटने नहीं देती, उसके हृदय के मर्मस्थानों का स्पर्श करती और सृष्टि में मानवीय गुणों का प्रसार करती है। मानसिक शाँती प्राप्त करने की दृष्टि से मनुष्य संगीत का दास बन सकता है ।